International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 82-83

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 82-83
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-01-2017
Accepted: 21-02-2017

डॉ. सुषमा चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
कमला नेहरु कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

Correspondence
डॉ. सुषमा चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
कमला नेहरु कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित राजा की दिनचर्या

डॉ. सुषमा चौधरी

काव्यशास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।।

अर्थात् बुद्धिमान जन अपना समय काव्य एवं शास्त्र आदि के अध्ययन में व्यतीत करते हैं, जबकि मूर्ख लोग व्यसन निंद्रा अथवा कजह में व्यतीत करते हैं। जीवन में समय को सुनियोजित करना अत्यंत आवश्यक है। संसार में न केवल मनुष्य अपने समय को नियोजित करता है अपितु सूर्य, चन्द्र, पशु–पक्षी इत्यादि भी समय पर ही अपने कार्य सम्पन्न करते हैं। जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सभी समय का विभाजन करके ही लक्ष्य प्राप्ति में सफल हुए हैं।
अतः जीवन में सफलता पाने का एकमात्र उपाय है अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करते हुए तदनुरुप कार्य करना। कौटिल्य अर्थशास्त्र राजनीतिक सम्बन्धी विषयों का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके प्रथम अधिकरण के 14वें प्रकरण के 18वें अध्याय में राजा की दिनचर्या का वर्णनद प्राप्त होता है। आचार्य कौटिल्य ने राजा के सदाचरण पर विशेष बल दिया। उनका मत है कि राजा के आचरण पर ही उसके कर्मचारियों का आचरण भी निर्भर है। यदि राजा उदार आचरण से सम्पन्न होता है तो उसके कृत्य भी उन्नत विचार एवं आचरण से युक्त होंगे तथा प्रमादी राजा के कर्मचारी भी प्रमादी हो जाएंगे!

राजानमुत्तिष्ठामान मनुतिलन्ते भृत्याः ।
प्रमाधन्तमनुप्रमाधन्ति।।

अतः राजा को चाहिए कि वह सावधानीपूर्वक अपनी उन्नति की ओर सचेष्ट रहे। इसलिए राजा की कार्य–व्यवस्था को नियमित ढंग से संचालित करने के लिए कौटिल्य ने राजा की दिनचर्या को व्यवस्थित किया। इसके लिए कौटिल्य ने रात और दिन को दो भागों में बांटकर प्रत्येक भाग को आठ–आठ भागों में बांट दिया है तथा ब्रह्ममुहूर्त में उठने के पश्चात् रात्रि में शयनपर्यन्त सम्पूर्ण कार्यों का विभाजन कर दिया है।
राजा को अपने दैनिक कार्यों का विभाजन कर अपने कार्यों के अनुसार समय विभाग निश्चित कर लेना चाहिए। उसे रात और दिन को आठ घड़ियों में बांटकर कार्य करना चाहिए।

तस्मादुत्थानमात्मनः कुर्वीत
नाडिकाभिरहरष्ट चा रात्रिं च विभवेत्।

उपरोक्त में बताया गया है कि पुरुष की छाया से समय का विभाजन किया जा सकता है।

1. सूर्योदय से लेकर जब तक पुरुष की छाया तिगुनी लम्बी रहे, वह दिन का पहला आठवां भाग है। इस छाया को 'त्रिपौरूपी' छाया कहते हैं।
2. वह छाया जब एक पुरुष के बराबर लम्बी रह जाए तो वह दिन का दूसरा भाग है, इसे 'एक पौरुषी' छाया कहते हैं।
3. जब यह छाया पुरुष के आकार से हटकर चार अंगुलमात्र रह जाए तो वह दिन का तीसरा पहर है, इसे चतुरंगुली छाया कहते हैं।
4. उसके बाद का समय मध्याह्न कहलाता है, यह दिन का चौथा भाग है। इसी प्रकार विपरीत क्रम से दिन के उत्तरार्द्ध के भी भाग कर दिन को आठ भागों में बांट लेना चाहिए।

त्रिपौरुषी पौरुषी चतुरङगुला च छाया मध्याह्न इति
चत्वारः पूर्वे दिवसस्पष्टि भागाः।। तैः पश्चिमा व्याख्याताः।

इस प्रकार दिन और रात का समान रूप से विभाजन कर लिखा जाए तो 12 घण्टे का दिन होगा और 12 घण्टे की रात। 12 घण्टे का दिन अर्थात् प्रातः 6 बजे से सांय 6 बजे तक। दिन का आठवां भाग $1^{1}/2$ घण्टे का होगा। इस प्रकार दिन का पहला भाग 6 से साढ़े 7 बजे तक का होगा, दूसरा आठवां भाग साढ़े 7 से 9 बजे तक इसी प्रकार क्रमशः अन्य भाग भी होंगे

राजा की दिनचर्या

1. कौटिल्य के अनुसार दिन के पहले भाग में राजा को रक्षा सम्बन्धी कार्यों का निरीक्षण करना चाहिए तथा राज्य के आय–व्यय का श्रवण करना चाहिए।
   ''तत्र पूर्वे दिवसस्याष्टभागे रक्षविधानमाय व्ययौ चं श्रृणुयानं।
2. दिन के दूसरे भाग में राजा को पुरवासियों तथा जनपदवासियों के कार्यों का निरीक्षण करना चाहिए–
   द्वितीये पौरजानपदानां कार्याणि पश्येत्।
3. दिन के तीसरे भाग में स्नान, भोजन तथा स्वाध्याय सम्बन्धी कार्य करने चाहिए–
   तृतीये स्नानं भोजनं सेवेत, स्वाध्यायं च कुवर्ति।
4 दिन के चौथे भाग में राजा को सुवर्ण ग्रहण (कर) और अध्यक्षों की नियुक्ति सम्बन्धी कार्यों का अवलोकन करना चाहिए–
   ''चतुर्थे हिरण्यप्रतिग्रहमध्यक्षांश्च कुर्वीत।
5. दिन के पांचवे भाग में राजा को मंत्री परिषद् के सदस्यों से पत्र–व्यवहार करना चाहिए तथा गुप्तचरों से गोपनीय विषयों का पता लगाना चाहिए–
   पंचमें मंत्रिपरिषदा पत्रसंप्रेषेण मंत्रयेत।
   चारगुहाबोधनियानि च बुद्धयेत।
6. दिन के छठे भाग में उसे स्वतंत्र होकर स्वेच्छापूर्वक विहार तथा स्वयं विचार करना चाहिए अर्थात् पूर्व कृत कार्यों व मंत्रणाओं पर स्वयं विचार कर निर्णय कर लेना चाहिए–
   ''षष्ठे स्वैर विहारं मन्त्रं वा सेवेत।
7. दिन का सातवां भाग राज्य के हाथी, घोड़ों रथों और आयुधों के निरीक्षण करने में व्यतीत करना चाहिए–
   ''सप्तमें हस्तयश्वरथायुधीयान् पश्येत्।
8. दिन के आठवें भाग में सेनापति के साथ बैठकर युद्ध–सम्बन्धी योजनाओं पर चिन्तन करना चाहिए–
   ''अष्टमें सेनापतिसर्वो विक्रमं चिन्तयेत्।

इस प्रकार सांयकाल हो जाने पर सन्ध्योपासना करनी चाहिए

''प्रतिष्ठिते अहनि संध्यामुपासीत।''

दिन की भांति रात के भी आठ भाग किए गए हैं।

1. रात्रि के प्रथम भाग में गुप्त पुरुषों से वार्तालाप करनी चाहिए–
   ''प्रथमें रात्रि भागे गूढ़पुरुषान्पश्येत्।''
2. दूसरे भाग में राजा को स्नान, भोजन और स्वाध्याय करना चाहिए–
   ''द्वितीये स्नानं भोजनं कुर्वीत स्वाध्यायं च।''
3. तीसरे भाग में तूर्य घोष (संगीत) के साथ शयनकक्ष में प्रवेश करके चौथे–पांचवें भाग तक सोना चाहिए–
4. ''तृतीये तूर्यघोषेण सविष्टश्चतुर्थपंचमौ शयीत।''
5. रात्रि के छठे भाग में तूर्य घोष के साथ निद्रा का त्याग कर शास्त्रों का अध्ययन कर अपने अपने कर्त्तव्यों का चिन्तन करना चाहिए।
   षष्ठे तूर्यषोषेण प्रतिबुद्ध शास्त्रमिति कर्त्तव्यती च चिन्तयेत्।
6. रात्रि के सातवें भाग में गुप्त मंत्रणा करके गुप्तचरों को उनके कार्य में नियुक्तकर उन्हें भेज देना चाहिए–
   सप्तमें मन्त्रम ध्यासीत, गूढ़पुरूषांश्च प्रेषयेत्
7. रात्रि के अन्तिम आठवें भाग में ऋत्विक, आचार्य और पुरोहित के साथ स्वरित्त वाचन करते हुए आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए–
   ''अष्टमें ऋत्विकचार्यपुरोहित स्वरवः।
   स्वस्व्ययानि प्रतिगृह्णीयात्।
   इसी समय वैद्य

इस प्रकार इस विस्तृत दिनचर्या के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कौटिल्य ने राजा को प्रमादी होने से बचाने के लिए तथा राज्य व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए राजा को एकदम नियंत्रित कर रखा है। वैसे कौटिल्य ने राजा को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दिनचर्या बनाने का अधिकार दिया है किन्तु यह ध्यान रखने को भी कहा है कि वह प्रमाद न करे–

आत्मबलानुकूल्येन वा निशाह र्भगान्
प्रविभज्य कार्याणि सेवेत।
कहा भी गया है – यथा राजा तथा प्रजा।

निष्कर्ष रूम में यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक परिवार राज्य है, माता–पिता (राजा) हैं तथा बच्चे प्रजा हैं। परिवार में माता–पिता की दिनचर्या व आचरण जैसा होगा बच्चे भी वैसे ही बनेंगे।
अतः परिवार की दिनचर्या व्यवस्थित होने पर ही समाज व राष्ट्र की दिनचर्या भी व्यवस्थित होगी तथा व्यक्ति, समाज, परिवार एवं राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। आधुनिक समय की दिनचर्या के विषय में संक्षेप में बस यही कहा जा सकता है–

आधुनिकता की चाह में
आज इंसान चला जा रहा है
अन्जाने में ही स्वयं को छला जा रहा है
तोड़कर रस्मों रिवाज की दीवारें
विषय–वासना के महल खड़े किए जा रहा है
लेकिन दिन वह भी आएगा
कि थक जाएगा थम जाएगा
और फिर लौटकर वह
प्रेम व आदर्श की उन्हीं मान्यताओं को अपनाएगा।

उपर्युक्त पंक्तियों में ही आदर्श दिनचर्या एवं समाज कल्याण निहित है।